Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

बच्चों के विकास पर कामकाजी माताओं का प्रभाव

डॉ. मीनाक्षी मीना

सहायक आचार्य समाजशास्त्र राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राजस्थान

सारांश

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में कामकाजी माताओं का समाज के निर्माण और अन्वेषण में अविश्वसनीय योगदान है। काम करने वाली माताएं एवं ग्रहणी माताएं किस प्रकर अपने बच्चों की देखभाल करती हैं और उनका बच्चों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? को मालुम करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि बच्चों के विकास और सीखने पर कार्यशील माताओं के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को पहचानने और उनका विश्लेषण करने तथा संबंधित अध्ययन की समीक्षा करते हुए कार्य कर रही माताओं के लिए एक अच्छी मां बनने के विचार विकसित करने का प्रयास किया जाए। एक कार्यव्यस्त मां अपने बच्चों के लिए एक आदर्श बन सकती है और उन्होंने अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को परितृप्त करने की प्रेरणा दी है। लेकिन दूसरी ओर, यदि काम कर रही माँ अपनी कुंठा या टेंशन घर ले आती है तो बच्चे नकारात्मक प्रवृत्ति पैदा कर सकते हैं और अपने बच्चों को सुरक्षित भावनात्मक साधन प्रदान करने में भी असफल रह सकती हैं। यह बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक विकास में बाधा डालता है। इसलिए बच्चों की शिक्षा और विकास पर माता की नियुक्ति के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों ही होते हैं, लेकिन कार्यशील माताओं के बीच माता-पिता और प्रबंधन कौशल की गुणवत्ता नकारात्मक प्रभाव को कम कर देती है। इस कौशल में उपलब्धि और संतुष्टि की भावना, काम की कुंठा और देखभाल और प्यार करने वाले बच्चों के कौशल का प्रबंध शामिल है।

मुख्य शब्द - कार्यरत माता, बच्चों के विकास, परवरिश, प्रबंध कौशल, संज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोप्रेरक विकास

अध्ययन के उद्देश्य -

इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों के विकास पर कामकाजी माँ के प्रभाव की जांच करना है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उद्देश्य हैं -

1. बच्चों के विकास पर कार्यशील मां के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव की पहचान करना।

2. बच्चों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए माता के बीच परवरिश (पेरेंटिंग) और प्रबन्ध-कुशलता विकसित करना।

परिचय

परिवार में महिलाओं की अनेक भूमिकाएं होती हैं जो सभी परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और भलाई को प्रभावित करती हैं। पूरे विश्व के हर समाज में, उन्हें स्तनपान कराने वाली महिलाओं द्वारा शिशुओं और बच्चों (UNDP, 1995) की प्राथमिक देखभाल करने वाली प्रथा के अनुसार सौंपा जाता है। इसीलिए परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला एवं माँ को प्रथम शिक्षिका माना जाता है। माँ के लिए बच्चों के लिए भोजन तैयार करना, पानी इकट्ठा करना तथा निरोधात्मक तथा उपचारात्मक चिकित्सा देखभाल करना महत्वपूर्ण कार्य है। महिलाएं पारिवारिक आय अर्जित करने के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, चाहे घरेलू खेतों या कारोबार में या मजदूरी कर्मचारी के रूप में। विकासशील देशों में इस प्रकार का कार्य परिवार के जीवित रहने के लिए अनिवार्य है, क्योंकि उसमें विशेष कौशल नहीं है बल्कि इसलिए क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ अधिक समय तक रहती है और उसके निर्देश बच्चों के व्यवहार, क्षमताओं और व्यवहार (Ravnbol 2011) पर बहुत गहरा प्रभाव दर्शाते हैं। अधिकांश बच्चे जो सफल और अच्छी तरह से समायोजित होते हैं, वे उन घरों से आते हैं जहां पैतृक दृष्टिकोण अनुकूल होता है और माता-पिता (Aeri & Jain 2010) के बीच मधुर संबंध बना रहता है। माताओं ने अपने बच्चों को जन्म से प्यार, स्नेह और देखभाल दी है। दुनिया के अधिकांश देशों में बच्चों की देखभाल एक बड़ी समस्या बन गई है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि बच्चों को मां के प्रेम की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। माता का घर से काम करने और बच्चों के साथ घर पर रहने के बीच चयन करना बहुत ही कठिन निर्णय होता है। उसे तय करना होता है कि वह परिवार की देख-भाल के लिए काम करती है या किसी अन्य काम में रुचि रखती है तथा अपना नाम और ख्याति चाहती है। वह विशेष क्षेत्र में प्रमाणित विशेष हो सकती है और यदि ऐसी स्थिति हो तो वह अपनी प्रतिभा बर्बाद नहीं करना चाहती है, उसे समय और ऊर्जा की बचत के लिए उपयुक्त नौकरी मिल जाए और आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करें, नाम और प्रसिद्धि Ravnbol (2011) व्यक्त करते हैं कि वर्तमान युग में महिलाओं की स्थिति बहुत मुश्किल है, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अधिक दिशाओं में ले जाया जाता है कुछ महिलाएं अपना कैरियर बनाने के लिए पूरी कोशिश करती हैं लेकिन कुछ बच्चे स्कूल जाने की प्रतीक्षा करते हैं। कुछ महिलाओं को अपनी नौकरी के लिए खुद को चुना जाता है जबकि कुछ को काम करने के लिए मजबूर किया जाता है चाहे वह काम कर रही हो या घर पर रह रही हो, अगर वह बच्चों की ओर ज्यादा ध्यान देती है, बच्चों के साथ अच्छा समय बिताती है, बच्चों के प्रति सच्चा प्यार प्रदर्शित करती है और एक दूसरे के साथ सच्चा रिश्ता बनाती है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। प्रयोगों और शोध से यह सिद्ध हो चुका है कि बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक

विकास का अधिकांश हिस्सा तीन वर्ष से कम की उम्र में ही होता है। ऐसे अनेक अनुसंधान हुए हैं जिनसे सिद्ध हो गया है कि कम आयु में माता-पिता का ध्यान न देना बहुत हानिकारक है। घर में काम करने वाली माताओं का बच्चा अपेक्षाकृत उन बच्चों से ज्यादा अच्छा होता जिनकी माँ बाहर का काम करती है। मां के लिए यह आवश्यक है कि वह बचपन से ही अपने बच्चों का पोषण करें और उनकी देखभाल करें। उसे अपने बच्चे के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहिए जो मां घर पर रहती है वह अपने बच्चों के साथ चैबीस घंटे होती है। वह उस औरत के बराबर कैसे हो सकती है जिसे उसके बच्चों से प्यार करने के लिए भुगतान किया जाता है? यह सवाल बिल्कुल ही अजीब है लेकिन तथ्य है कि क्या माताओं का कैरियर अधिक महत्वपूर्ण है? निश्चित रूप से उत्तर नहीं होगा तो कैसे एक माँ एक काम करने के लिए और उसके बच्चों के पालन के लिए तत्पर होगा?

भारत में काम कर रही माताओं की स्थिति

भारत में काम कर रही माताओं ने इस प्रक्रिया में अपनी आवश्यकताओं की उपेक्षा करते हुए अपने परिवार की जरूरतों को प्राथमिकता दी है। महिलाएं अपने परिवार के अनेक महत्वपूर्ण कार्य करती है, उसके बाउजूद भी बहुत सी कामकाजी महिलाओं के सामने आर्थिक चिंता का विषय बना हुआ है। वे यह जानना चाहती हैं कि उन्होंने काम करते समय अपने बच्चों को सुरक्षित, संरक्षित और पोषण के माहौल में रखा है। अपने बच्चों को मां की जरूरत होती है उसी प्रकार एक मां की अपने बच्चों की जरूरतों होती है। इसको देखते हुए अपनी निजी जरूरतों में संतुलन बनाए रखने के लिए सुरक्षित, सहयोगी और उत्साहवर्धक माहौल की जरूरत होती है। काम कर रही माँ के रूप में उसके निर्णय के साथ सहज महसूस करना जरूरी है। काम करने वाली माताओं को यह महसूस होता है कि उन्हें अपने काम को सुरक्षित रखने की जरूरत है। सामान्यतः यह माना जाता है कि माता की नियुक्ति का बच्चों की समग्र वृद्धि और विकास पर निश्चित प्रभाव पड़ता है। बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक विकास के लिए पहले पांच वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे बच्चों की किशोरवस्था उन बच्चों से बेहतर होते हैं जो अपनी माँ की देखभाल जल्दी और समुचित रूप से करती हैं। कम उम्र में बच्चों के लिए आवश्यक देखभाल और स्नेह बदले नहीं जा सकते क्योंकि इससे बच्चों के जीवन पर असर पड़ता है। घर अच्छी तरह से सम्भालने वाली मां अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने और शिक्षित करने के साथ एक अच्छी नौकरी कर सकती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत में माताओं के द्वारा अपने कार्य के साथ ऑफिस, घर एवं खेती का हो, अपने बच्चों की भलिभांती देखभाल करती नजर आती है।

बच्चों के विकास पर सकारात्मक प्रभाव

एक कार्यशील मां, जिसकी उपलब्धि और संतुष्टि का थोड़ा-बहुत अहसास हो, अपने बच्चों के लिए आदर्श बन सकती है। बच्चे अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। काम और परिवार का प्रभावी प्रबंध करने वाली माताएं अपने बच्चों में काम के प्रति नैतिक महत्व रखती हैं। देवियों और सज्जनों, विशेष रूप से अपनी बेटियों को रूढ़िबद्ध रीति रिवाजों को तोड़ने में और उनके लिए जिन्दगी में जिस चीज को रखना चाहते हैं, उसके लिए काम करने में मदद कर सकते हैं। काम कर रही माताओं को गतिविधियों की एक बहुतायत का प्रबंधन करना है, वे अपने बच्चों की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। माता-पिता दोनों के काम करने से परिवार के प्रत्येक सदस्य को और अधिक सक्रिय भूमिका निभानी होती है। बच्चों को कौशल सीखना है कि वे अन्यथा नहीं सीखेंगे स्वतंत्र बच्चों को जन्म देने से वे वास्तविक दुनिया के लिए तैयार हो जाते हैं और उनमें उत्तरदायित्व का बोध होता है। काम करने वाली माताएं अपने बच्चों के साथ अच्छा समय बिताती हैं ताकि वे एक साथ कितने समय तक नहीं गुजरें। बच्चे भी अपने माता-पिता के साथ समय बिताने के लिए तत्पर रहते हैं। वे अपनी मां का ध्यान इस ओर नहीं पातीं कि घर पर रहने वाली मां के बच्चों का ध्यान उनकी माताओं के सम्मुख हो जाए और वे उनके प्रयासों को स्वीकार करने में असफल रहें, जिन वित्तीय लाभों के साथ काम करने वाले माता-पिता, जैसे अच्छे स्कूल जाने और अतिरिक्त पाठ्यक्रम के हितों का पालन करने से बच्चों में सुरक्षा की भावना पैदा हो सकती है।

बच्चों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव

खराब गुणवत्ता के आधार पर आये दिन बच्चे की देखभाल-सेवाएँ करते हैं तो उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास में बाधा डाल सकती हैं। निम्न, योग्य और बोझिल कर्मचारी अपने बच्चे को प्रतिदिन घटिया सुविधाएं उपलब्ध करवाते हैं तो आपके बच्चे के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर असर डाल सकता है। माताओं को महसूस हो सकता है कि काम और परिवार को संतुलित करने की कोशिश करने से वे थके हुए हैं। माता अपनी कुंठा को लेकर घर लौटती हैं, तो बच्चे नकारात्मक प्रवृत्ति पैदा कर सकते हैं जिससे वे उनके काम को परिवार के लिए संकट का एक स्रोत समझ सकते हैं। माताओं, अपने बच्चे की रुचि के बावजूद, अपने बच्चों को सुरक्षित भावनात्मक आउटलेट प्रदान करने में विफल हो सकती हैं। वे अपने काम में व्यस्त दिन के बाद अपने बच्चों के मुद्दों को सुनने के लिए उत्साहित नहीं हो सकते। ऐसे मामलों में बच्चे कहीं और विकल्प ढूंढ सकते हैं या केवल यह महसूस कर सकते हैं कि उनके माता-पिता को उनके जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं है। माता के रोजगार पर माता इस तरह का पैतृक संघर्ष बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इससे उसके आत्म-सम्मान को क्षति पहुंचती है और जो माता घर में रहती है उसे असुरक्षित बना देती है तथा अपनी परिस्थिति के प्रति अप्रसन्न रहती है, वह

आदर्श माता नहीं हो सकती। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो माताएं अपने बच्चे को अच्छी तरह से देखभाल करती हैं तो उन बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पडने की सम्भावना कम हो सकती सकता।

परवरिश (Parenting) और प्रबंध कौशल

ऐसा प्रतीत होता है कि माँ के रोजगार का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और उनके बच्चों के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिशु काल में माता के रोजगार के कारण बच्चे को बुरी तरह से पीड़ा होती है उस मामले में माताओं को अधिक सावधान रहना चाहिए। उन्हें यह बात समझ लेनी चाहिए कि अपने बच्चों के साथ बिताए जाने वाले समय की अपेक्षा उनके बच्चों के साथ बिताए जाने वाले समय की गुणवत्ता कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उन्हें बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए क्योंकि वे अपने ग्राहकों के साथ व्यवहार करते हैं। उनके साथ समय निर्धारित करना चाहिए और उनके लिए सब कुछ करना चाहिए। ऑफिस से लौटते समय अपनी पहली पुत्रसत्ता यह होनी चाहिए कि बच्चों के साथ वे खेलते रहें या उनसे दिलचस्प बातें करें। माताओं को व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए बच्चों की कंपनी के साथ बैठकर फोन बंद कर देना चाहिए। उन्हें एक दूसरे की कंपनी का आनंद लेना चाहिए मां की रोजगार के कारण बच्चों में भावनात्मक विकास एवं लगाव बुरी तरह प्रभावित होता है। जब काम खत्म हो जाए तो काम करने वाली माताओं को अपने बच्चों के साथ पूरा समय बिताना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों की कंपनी को प्राथमिकता देना चाहिए उन्हें अपने सभी अतिरिक्त गतिविधियों को समाप्त करना चाहिए उन्हें अन्य बच्चों जैसे खेलों के साथ कम समय बिताना चाहिए और माताओं को बच्चों के साथ खेलने का अधिक समय बिताना चाहिए। इससे बच्चों के अलगाव में कमी आएगी और भावनात्मक विकास तथा लगाव बढ़ेगा। माताओं के रोजगार के अधिकतर परिवारों में अनुवीक्षण और पर्यवेक्षण की कमी पाई जाती है। उस मामले में माताओं को फोन के माध्यम से बच्चों की निगरानी करनी चाहिए। उन्हें हर एक घंटे के बाद बच्चों को फोन करना चाहिए ताकि बच्चों को यह बात समझाई जा सके। मां को अपने बच्चों पर हर प्रकार नजर रखनी चाहिये। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माताओं के कुशल प्रबंधन से ही बच्चों का विकास सम्भव है।

निष्कर्ष

परिवार और समाज के विकास में काम करने वाली महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। चाहे वह कार्यस्थल पर काम करती हो, घर की पत्नी हो या बच्चों की माता कामकाजी माँ के रूप में हो। अपने बच्चों के सीखने और विकास पर प्रभाव को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से देखा जाता है। अपने सकारात्मक प्रभाव से बच्चे अपने उद्देश्यों और आकांक्षाओं को पूरा करने, स्वतंत्र तथा वास्तविक दुनिया का ज्ञान बढ़ाने तथा बच्चों में उत्तरदायित्व की भावना पैदा करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। नकारात्मक

प्रभाव के रूप में, बच्चों को भावनात्मक रूप से बाधित किया जा सकता है, नकारात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न हो सकती है और बच्चों के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और बच्चों में आक्रामक प्रकृति भी पैदा हो सकती है। परंतु परवरिश (Parenting) और कौशल प्रबंधन के द्वारा माँ द्वारा घर के बाहर काम करते समय पर भी एक अच्छी मां हो सकती है। इस कौशल में उपलब्धि और संतुष्टि की भावना, काम की कुंठा और देखभाल और प्यार करने वाले बच्चों के कौशल का प्रबंध शामिल है।

References

1. Almani, A- s, Abro, A., & Mugheri] R.A. (2012). Study of the effects of working mother on development of children in pakistan- International journal of humanities and social science, 77-84
2. Bayard, N., & Brooks&Gunn, J. (1991). Effects of Maternal Employment and Arrangements on Pre-schoolers' Cognitive and Behavioural Outcomes: Evidence from Children of the National Longitudinal Survey of Youth. Developmental Psychology, 27, 932 945.
3. Benal, R. (2008). The Effect of Maternal Employment and Child Care on Children Cognitive Development". International Economic Review,49(4) , 1173-1209.
4. Blau, F., & Grossberg, A. (1992). Maternal Labor Supply and Children's Cognitive. Review of Economics and Statistics, 70(3), 474-484.
5. Brooks-Gunn, J Waldfogel, J, & Han, W., (2002). The effects of early maternal employment on child cognitive development- American Educalional Research Journal] 40(4), 879-901.
6. Del, B. D, & Vuri, D. (2002). The Mismatch 'between Employment and Child Care in Italy: the Impact of Rationing. Journal of Population Economics, 20(4) 805-832.
7. Ering, S. O., Akpan, F. U. & Emma-echiegu, N.(2014, April). Mother's Employment Demands and Child Development: An Emprical analysis of working In Calabar Municipality- 'International Journal Of Contemporary Research, 04(4) 77-86. Retrieved from, http:www-aijcrmet.com
8. Fitzpatrick, M. (2008). Starting School at Four: The Effect of Universal Pre-Kindergarlen on Children's Academic Achievement. The B.E. Journal of Economic Analysis & Policy, 8(1), 1-38.
9. Francavilla, F. (2010). The relation between chid work and the employment of mothers in India. International Journal of Manpower, 232-257.
10. Glick, P. (2002). Women's empioyment and its relation to children's health and schooling in developing countrie’s; conceptual links, empirical evidence and policies, cornell : Cormell University.
11. Han, W. Waldfogel, J., & Brooks-Gunn, J. (2001). The Effects of Early Maternal Employment on Later Cognitive and Behavioral Outcomes. Journal of Marriage and the Family, 63, 336-354.
12. Hoffman, L. W. & Youngble. L. M. (1999). Mothers at work: Effects on children's well-being. New York: Cambridge University Press.
13. Horwood, L. J., & Fergusson, D. M. (1999). A longitudinal study of maternal labour force participation and child academic achievement. Journal of Child Psychology and Psychiatry, 40(7) 1013-1024.
14. Hsin, A. (2009). Parent's time with children: Does time matter for children's cognitive achievement?, Social Indicators Research, 93(1), 123-126.
15. Jain, P. A. (2010), Effect of employment status of mothers on conceptual skills of pre-schoolers. Haryana, India: Department of Human Development, Guru Nanak girls college.

16. James-Burdumy, S. (2005). The Effect of Maternal Labor Force Participation on Child Development. Journal of Labor Economics, 23(1), 177-211.
17. Kalmin, M. (1994). Mother's occupational status and children's schooling- American Sociological Review, 59, 257-275.
18. Ravnbol, C. I. (2011). Women motherhood early childhood development- UNICEF Report.
19. Sullana, A. M., & Noor, Z. (2012, March) Mother's perception on the impact of employment on their children: Working and Non-working mothers- International Peer Review Joumal, 02, 58-65. doi:http://dÛ-doi-org/10.7718/ijss- v2i/ 15
20. United Nations Development Programme (1995). Human development Report. Newyork.
21. Vandell, D,. & Ramanan, J. (1992). Effects of early and recent maternal employment on children from low income families. Child Development, 63, 938-949.